RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल–011/2015-17

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

# आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

मूल्य : 2 रु.
वर्ष: 72 अंक : 38
सृष्टि संवत् 1960853116
20 दिसम्बर 2015
दयानन्दाब्द 189
वार्षिक : 100 रू.
आजीवन : 1000 रू.
दूरभाष : 2292926, 5062726

जालन्धर

वर्ष–72, अंक : 38, 17/20 दिसम्बर 2015 तदनुसार 5 पौष सम्वत् 2072 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

# अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी

-ले० श्री सुदर्शन शर्मा जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

देश और धर्म की बलिवेदी पर जिन अमर हुतात्माओं ने अपने प्राणों की बलि चढ़ाई है, उनमें स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का नाम अग्रगण्य है। स्वामी श्रद्धानन्द जी का पूर्व नाम मुन्शीराम था। वे भारत माता के सच्चे सपूत थे, जिन्होंने भारत की स्वतन्त्रता के लिए ही नहीं बल्कि राष्ट्र की सामाजिक, धार्मिक एवं राजनीतिक दशा सुधारने में अपना सर्वस्व समर्पित कर दिया। महर्षि दयानन्द के सच्चे अनुयायी बनकर आर्य समाज एवं महर्षि की मान्यताओं के प्रचार व प्रसार में तन-मन-धन एवं मनसा, वाचा, कर्मणा कटिबद्ध हो गए। मुन्शीराम का प्रारम्भिक जीवन उच्छृंखलताओं से परिपूर्ण था लेकिन युग प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के सान्निध्य ने मुन्शीराम का जीवन पूर्णरूपेण बदल ड़ाला। एक नास्तिक तथा भ्रष्ट पथों के अनुयायी को स्वामी दयानन्द के प्रथम दर्शन ने ही अगाध आस्तिक बना दिया तथा मुन्शीराम के जीवन में ऐसी जीवन शक्ति का संचार हुआ कि आगे चलकर वह समस्त विश्व का पथ प्रदर्शक बन गया। कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का सिंहनाद करने वाला वह बहादुर सेनानी करनी और कथनी में भेद नहीं मानता था। जब उस कर्मयोद्धा ने आर्य समाज की मान्यताओं की प्रतिस्थापना समस्त धरती पर करने का संकल्प लिया तो अपने गुरू स्वामी दयानन्द की भांति ही सच्चा सैनिक बनकर निकल पड़ा और इतिहास इस बात का साक्षी है कि स्वामी श्रद्धानन्द ने सफलताओं का मानदण्ड़ स्थापित कर दिया। स्वामी दयानन्द सरस्वती के उपरान्त आर्य समाज की सफलताओं में चार चांद जिन अमर बलिदानियों ने लगाए हैं उनमें भी स्वामी श्रद्धानन्द का नाम सर्वोपरि है। यथा नाम तथा गुण की कहावत को चरितार्थ करते हुए स्वामी श्रद्धानन्द, श्रद्धा एवं आनन्द की साक्षात् मूर्ति थे। सारा संसार उनका अपना था और सारे संसार की भलाई के लिए वे प्रतिक्षण उद्यत रहा करते थे। वैदिक धर्म के प्रचार के लिए उन्होंने अनेकों कदम उठाए। स्वामी श्रद्धानन्द की आस्था थी कि राष्ट्र एवं समाज का सुधार तभी सम्भव है जब राष्ट्र के भविष्य बच्चों का सुधार किया जाए। इसी आस्था से अभिभूत होकर स्वामी श्रद्धानन्द ने महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा प्रतिपादित शैक्षिक सिद्धान्तों की स्थापना हेतु गुरूकुल खोलने का बीड़ा उठाया। संसार प्रसिद्ध गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय इस बात का ज्वलन्त साक्षी है कि स्वामी श्रद्धानन्द जी का जीवन कितना तपस्वी, त्यागमय, निष्ठामय था। भारतीय संस्कृति तथा सभ्यता के इस अनन्य उपासक ने गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के रूप में राष्ट्र को जो संस्था समर्पित की है, वह भारत का गौरव है। महात्मा गांधी जब पहली बार गुरूकुल पधारे तो अत्यन्त कारूणिक दृश्य उपस्थित था। राष्ट्रपिता स्वामी श्रद्धानन्द के आगे नतमस्तक होते हुए कहने लगे- महात्मन्, आपने मेरी आँखों के सामने प्राचीन भारत का दृश्य उपस्थित कर दिया है। यही नहीं स्वामी श्रद्धानन्द में राष्ट्र प्रेम प्रतिक्षण उद्वेलित होता रहता था। भारत के स्वाधीनता संग्राम में स्वामी श्रद्धानन्द ने अपने को तथा गुरूकुल को झोंक दिया था। स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान भरे जीवन से प्रेरित होकर आर्य समाज के हजारों नौजवान भारत की आजादी के लिए क्रान्ति पथ के पथिक बने थे। स्वामी श्रद्धानन्द जी महात्मा गांधी के आन्दोलनों में भी बराबर हिस्सा लिया करते थे। वे वीरता तथा साहस की प्रतिमूर्ति थे। दिल्ली के चांदनी चौक में आजादी के लाखों दीवानों का नेतृत्व करते हुए उस बहादुर सेनापति ने अंग्रेजी सैनिकों के सामने अपना सीना खोलकर ललकारा था- है हिम्मत तो चलाओ गोलियां इस सीने पर। स्वामी श्रद्धानन्द की इस ललकार को सुनकर अंग्रेजों की संगीने झुक गई। स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का सम्पूर्ण जीवन राष्ट्र की एकता के लिए समर्पित रहा। स्वामी श्रद्धानन्द साम्प्रदायिक सद्भावना के प्रतीक थे। दिल्ली की विख्यात जामा मस्जिद से मुस्लिम भाईयों को उनका संबोधन इतिहास की वस्तु बन चुका है। वे चाहते थे कि सारी धरती पर प्यार एवं करूणा का प्रवाह हो, सहिष्णुता एवं सद्भावना का उद्भव हो, वैदिक धर्म की पताका के नीचे सारी धरती के लोग एक होकर सुख, समृद्धि एवं सफलता का जीवन व्यतीत करें। लेकिन जब स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अपने बिछुड़े हुए भाईयों को मिलाने के लिए शुद्धि आन्दोलन चलाया तो एक मतान्ध मुस्लिम ने गोली मारकर स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन का अन्त कर दिया। आज स्वामी श्रद्धानन्द जी हमारे बीच में नहीं हैं लेकिन वीरता एवं साहस, त्याग एवं बलिदान, देश एवं धर्म भक्ति का जो मार्ग उन्होंने प्रशस्त किया है वह अनन्त काल तक संसार को प्रेरणा देता रहेगा। स्वामी श्रद्धानन्द के आदर्श एवं कार्य प्रकाश पुञ्ज का कार्य कर सकते हैं। स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस मनाते हुए हम सभी मिलकर आर्य समाज की उन्नति का प्रण लें। महर्षि दयानन्द एवं आर्य समाज के सच्चे सैनिकों का यह पावन कर्त्तव्य है कि वे स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन से प्रेरणा लेकर अपना जीवन राष्ट्र, समाज एवं धर्म की सेवा में समर्पित करें। यही हमारी उस महापुरूष के प्रति सच्ची श्रद्धाजंलि होगी।

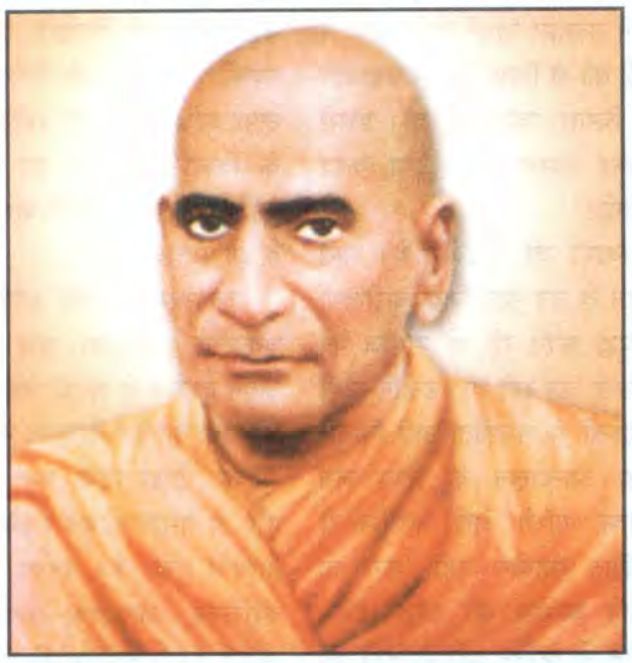

# व्रत पालक-स्वामी श्रद्धानन्द

-ले० श्री सुरेश शास्त्री सभा कार्यालय जालन्धर

स्वामी श्रद्धानन्द जी उन महापुरूषों में से हैं जिनका जीवन एक आदर्श जीवन था। उन्होंने अपने चारों आश्रम शास्त्रानुसार पूर्ण किए और गुरूकुल शिक्षा प्रणाली को पुनर्जीवित किया। काँगड़ी के भयंकर और बीहड़ जंगल में जब उन्होंने गुरूकुल स्थापित करने का संकल्प लिया तो लोग कहने लगे कि रीछों, शेरों और हाथियों के उस वन में कौन अपने बच्चों को पढ़ने के लिए भेजेगा। परन्तु जब महात्मा मुन्शीराम ने सबसे पहले अपने लड़कों को पढ़ने के लिए भेजा तो सारा आर्य जगत् वाह-वाह कर उठा और गुरूकुल में शिक्षा पाने के लिए भारत ही नहीं बाहर के देशों के ब्रह्मचारी भी आने लगे। इतनी अच्छी सफलता मिली कि पादरी ऐन्ड्रयूज और महात्मा गांधी को भी वहाँ के जलवायु ने खींच लिया। स्वामी दयानन्द के स्वप्नों को साकार करने वाले, भारतीयता को आधुनिकता प्रदान करने का प्रयास करने वाले स्वामी श्रद्धानन्द गुरूकुल प्रणाली की शिक्षा का प्रारम्भ करने वाले पहले व्यक्ति थे। भाषा, साहित्य और इतिहास के अध्ययन तथा शारीरिक और आध्यात्मिक रूप से सुदृढ़ व्यक्तित्व का निर्माण देश के लिए आवश्यक समझते थे। गुरूकुल शिक्षा प्रणाली के माध्यम से वह सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास चाहते थे। ऋग्वेद में मन्त्र आता है-

**व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम्।**
**दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते।।**

इस मन्त्र का भाव यह है कि मानव जीवन का चरम लक्ष्य सत्य की उपलब्धि है और इस लक्ष्य की प्राप्ति के सोपान हैं व्रत, दीक्षा, दक्षिणा और श्रद्धा। स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का सम्पूर्ण जीवन इसी मन्त्र के सोपानों से ओतप्रोत था।

स्वामी श्रद्धानन्द सत्य के पुजारी थे तथा सत्य की प्राप्ति में ही उन्होंने अपना जीवन बलिदान कर दिया। वह दानवीर, धर्मवीर, दयावीर तथा युद्धवीर थे। संसार में विरले ही मनुष्य ऐसे होते हैं जिनमें यह सभी विशेषताएं हों। गुरूकुल कांगडी की जब स्थापना हुई तब धन के लिए स्वामी श्रद्धानन्द ने अपील की। किन्तु वेद के कथनानुसार दान माँगने का अधिकार उनको है जो स्वयं दान देते हैं। स्वामी जी ने अपनी सारी सम्पत्ति गुरूकुल के नाम कर दी। लोगों ने उनके इस त्याग को देखते हुए उनकी झोली भर दी। स्वामी श्रद्धानन्द दया की दिव्य मूर्ति थे। जब वे गुरूकुल कांगडी के अधिष्ठाता थे तो एक ब्रह्मचारी को तेज ज्वर था। वह पीड़ा से कराह रहा था। स्वामी जी उसके समीप बैठे थे। इतने में ब्रह्मचारी को उल्टी आई। स्वामी जी ने तत्काल अपने दोनों हाथों में उल्टी को ले लिया जिससे ब्रह्मचारी का बिस्तर खराब न हो। इससे बढ़कर ममता और दया कहां मिलेगी।

स्वामी जी युद्धवीर थे। सारा जीवन वे उन सामाजिक कुरीतियों से युद्ध करते रहे जो समाज को खोखला कर रही थी। उन्होंने कभी सिद्धान्तों से समझौता नहीं किया। शुद्धि आन्दोलन के लिए जब महात्मा गांधी और कांग्रेस से अपेक्षित सहयोग नहीं मिला तो उन्होंने कांग्रेस को छोड़ दिया। कठिन से कठिन परिस्थितियों का स्वामी श्रद्धानन्द ने डटकर सामना किया और उसमें विजय पाई। दिल्ली के चांदनी चौक में जब अंग्रेज सिपाहियों ने जुलूस का रास्ता रोकने की प्रयास किया तो स्वामी जी ने छाती आगे की और कहा कि है हिम्मत तो चलाओ गोली मेरे सीने पर। स्वामी जी की वीरता को देखकर सिपाहियों की संगीने झुक गई और जुलूस को आगे जाने दिया गया। इतिहास में पहला अवसर था जब किसी गैर मुस्लिम व्यक्ति ने जामा मस्जिद की मिम्बर से भाषण दिया हो। वहां पर भी स्वामी जी ने अपने सिद्धान्तों पर दृढ़ रहते हुए वेदमन्त्र के साथ अपने भाषण को आरम्भ किया। स्वामी जी हर चुनौती का स्वागत करते थे और उस चुनौती पर विजय प्राप्त करते थे। दोषों से भरे जीवन को छोड़कर मानवता के उच्च शिखर पर पहुंचने के लिए अगर सबसे प्रेरणादायक कोई व्यक्तित्व है तो वह स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज हैं।

स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अपने सम्पूर्ण जीवन में व्रतों का पालन किया, सत्य के ऊपर दृढ़ रहे, धर्म के ऊपर अड़िग रहे। कल्याण मार्ग का पथिक लिखते समय उन्होंने अपने जीवन के एक-एक पहलू का वर्णन किया। प्राय: व्यक्ति जब अपने बारे में किसी को बताता है या अपनी आत्मकथा लिखता है तो वह अपनी बुराईयों का जिक्र नहीं करता और अच्छाईयों को बढ़ा-चढ़ा कर लिखता है परन्तु स्वामी श्रद्धानन्द जी ने सत्य के ऊपर अडिग रहते हुए अपने जीवन के किसी भी पहलू को छिपाया नहीं। ऐसा वही व्यक्ति कर सकता है जो सत्यवादी हो।

जालन्धर में अपनी जमी-जमाई वकालत ठुकराकर जब उन्होंने अपने दुर्भाग्य से लिपटे देशवासियों की सेवा का व्रत लिया तो कर्मयोगी बनकर दिखा दिया कि आर्थिक दृष्टि से समृद्ध जीवन उनके सामने अत्यन्त तुच्छ है। उनका विशाल व्यक्तित्व, आकर्षक वाणी तथा आदर्श दृढ़ता उन्हें ख्याति की चरम सीमा तक ले गया। देशरत्न डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जी स्वामी श्रद्धानन्द को श्रद्धाजंलि देते हुए लिखते हैं कि उनकी निर्भीकता, साहस व स्पष्टवादिता के गुणों को अंग्रेजी सरकार अच्छी प्रकार जानती थी। परन्तु इन गुणों को उनके स्वदेशवासी सहयोगी कार्यकर्ता भी तीव्रता से अनुभव करते थे। जो लोग काले कानून के विरोधी आन्दोलन के समय दिल्ली के चांदनी चौक में मौजूद न भी थे, उनके हृदय पटल पर भी स्वामी जी की वह निर्भीक मूर्ति अमिट रूप से चित्रित है! उस समय स्वामी जी ने अंग्रेजी गोलियों और संगीनों के सामने अपना सीना खोलकर हृदय की निर्भीकता तथा उच्चता का प्रत्यक्ष उदाहरण उपस्थित किया। उनकी उस शुद्ध तथा उच्च भावना ने जामा मस्जिद के मिम्बर पर से उनसे उपदेश करवाया और हिन्दू मुस्लिम एकता का मनोरम दृश्य दिखलाया। उसी दृढ़ता, सत्यनिष्ठा, स्पष्टवादिता और निर्भीकता के कारण आततायी के हाथों शहादत प्राप्त की। भारत के आधुनिक इतिहास में स्वामी जी का स्थान प्रथम सांस्कृतिक पथप्रदर्शक का है। जिनको स्वामी जी के साक्षात् दर्शन का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ, उनके लिए स्वामी जी के जीवन वृतान्त को पढ़ाना ही मनुष्य को उन्नति के मार्ग पर अग्रसर करने वाला है।

भारत के राजनीतिक, सामाजिक तथा धार्मिक जीवन में नवीन चेतना जागृत करने वाली इस महान् आत्मा का 23 दिसम्बर 1926 को एक मतान्ध व्यक्ति द्वारा गोली मारकर अन्त कर दिया गया था। अपने आदर्शों की प्रतिमूर्ति, आत्मविश्वास से परिपूर्ण, लक्ष्य के प्रति असीम आस्थावान् तथा सर्वशक्तिमान् परमात्मा पर दृढ़ विश्वास रखने वाली इस आत्मा का बलिदान अपने समय की एक अभूतपूर्व घटना थी।

आर्य बन्धुओं स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस मनाते हुए हम सभी मिलकर उस महामानव के द्वारा बताए गए मार्ग पर चलते हुए आर्य समाज की उन्नति के लिए कार्य करें। अगर हम स्वामी श्रद्धानन्द जी को सच्ची श्रद्धाजंलि देना चाहते हैं तो उनके कार्यों को अपने जीवन में अपनाएं। स्वामी जी का बलिदान हमें प्रेरणा देता है कि अगर व्यक्ति दृढ़ संकल्प धारण कर ले, सत्य को जीवन में अपना ले तो कुछ भी असम्भव नहीं है। अंत में स्वामी श्रद्धानन्द जी के लिए यही कहना चाहूंगा कि-

**सच है विपत्ति जब आती है,**
**कायरों को ही दहलाती है।**
**सूरमा विचलित नहीं होते,**
**क्षण एक नहीं धीरज खोते।**
**विघ्नों को गले लगाते हैं,**
**कांटों में राह बनाते हैं।।**

सम्पादकीय.....✍

# श्रद्धानन्द बलिदान दिवस का संदेश

23 दिसम्बर का दिन आर्य समाज के गौरव पूर्ण विभूति स्वामी श्रद्धानन्द जी के बलिदान का दिवस है जो सारे आर्य जगत् में समारोहपूर्वक मनाया जाएगा। महर्षि दयानन्द के पश्चात आर्य समाज के संगठन एवं प्रसार की दृष्टि से स्वामी श्रद्धानन्द जी का यशस्वी नाम आर्य समाज के इतिहास में प्राय सर्वप्रथम स्थान रखता है। उनका विशाल व्यक्तित्व दिव्य कार्यक्षमता, अनुकरणीय त्याग तथा साहसपूर्वक नेतृत्व सभी कुछ हमारे लिए ऐसा आदर्श रहा जिससे युगों तक हमें प्रेरणा तथा स्फूर्ति मिलती रहेगी। स्वामी दयानन्द एक विद्युत शक्ति थी तो उनका शिष्य स्वामी श्रद्धानन्द मानो एक विशाल यन्त्र था जो उससे संचालित हो रहा था। महर्षि के पश्चात् उनके मनोरथों को कार्यान्वित करने का उन्होंने बीड़ा उठाया। शिक्षा, समाज सुधार, देश की स्वाधीनता का आन्दोलन आदि सभी क्षेत्रों में उन्होंने मूर्त रूप धारण करके स्वामी दयानन्द के स्वप्नों को साकार करने का प्रयास किया। शिक्षा के क्षेत्र में गुरूकुल कांगड़ी जैसी संस्था उनकी क्रान्तिकारिणी क्षमता एवं प्रतिभा का सुन्दर प्रमाण है। इस प्रयास के द्वारा गंगा के तट पर ही बैठकर उन्होंने युग गंगा के प्रवाह को बदलने का सफल प्रयोग किया। छूआछूत दूर करने के लिए सक्रिय पग उठाने के लिए जब महात्मा गांधी जी तक अपेक्षित साहस न दिखा सके तो स्वामी जी ने बहुत व्यापक स्तर पर इस बुराई के उन्मूलन के लिए तीव्र आन्दोलन चलाया। पीछे चलकर महात्मा गान्धी ने भी इस आन्दोलन को अपने कार्यक्रम का मुख्य अंग बनाया परन्तु आर्य समाज के आन्दोलन से महात्मा जी के आन्दोलन में यह मौलिक अन्तर रहा कि आर्य समाज का आन्दोलन मानवीय भावनाओं पर ही आधारित था जबकि कांग्रेस के आन्दोलन के पीछे राजनैतिक स्वार्थ निहित थे। इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि आर्य समाज के आन्दोलन का स्तर ऊंचा रहा। आर्य समाज ने अछूतों को गले मिलाया तो केवल भावनाओं के आधार पर और कांग्रेस ने उन्हें अपनाया तो उन्हें राजनैतिक सत्ता प्राप्ति का साधन बनाया।

स्वामी श्रद्धानन्द जी ने शुद्धि आन्दोलन को भी जन्म दिया। यह आन्दोलन न केवल धार्मिक था, अपितु इसके पीछे राष्ट्रीय एकता की दूरदर्शिता काम कर रही थी। स्पष्ट था कि मुस्लिम तथा ईसाई मतों के प्रचार के नाम पर देश में राष्ट्रीयता विरोधी तत्व तथा भावनाएं पनप रही थी। अंग्रेज शासक इन्हें अपने साम्राज्यवादी प्रयोजनों की सिद्धि के लिए प्रोत्साहित कर रहे थे। दूसरी ओर भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन के नेता अपनी आरम्भिक दुर्बलताओं के कारण इन आन्दोलनों के आगे झुकने में ही कल्याण समझते थे। परन्तु स्वामी श्रद्धानन्द जैसा महारथी किसी लौकिक शक्ति का मुंह देखकर अपने आत्मा की पुकार को दबाने वाला नहीं था। उन्होंने तथाकथित लोगों का रोष एवं क्षोभ मोल लेकर भी शुद्धि आन्दोलन को तीव्र किया। हजारों की संख्या में मुसलमानों एवं ईसाईयों को वैदिक धर्म में दीक्षित करके वैदिक संस्कृति का उपासक बनाया। उनके दिव्य चक्षु उस खतरे को देख रहे थे कि मजहब के नाम पर विदेशी वासनाओं से ग्रस्त करोड़ों लोग देश की स्वाधीनता का साम्प्रदायिक आधार पर विरोध करेंगे और उसी आधार पर देश के विभाजन की मांग उठेगी। इसीलिए उन्होंने राष्ट्र के शरीर को क्षीण करने वाली इस मलिनता को धो ड़ालने का संकल्प किया था। परन्तु दुर्भाग्य है हमारा और हमारे देश का कि स्वामी जी एवं आर्य समाज के इस आन्दोलन का प्रवाह हिन्दुओं की संकीर्ण एवं राजनैतिक नेताओं की विवेकहीनता की बाधाओं ने अवरूद्ध कर दिया। अगर राष्ट्र मालिन्य के शोधन की यह विधि हमें हृदयंगम हो जाती तो देश को इस दुर्दशा का मुंह न देखना पड़ता। जब स्वामी जी आगरा में शुद्धि कर रहे थे तो मुसलमान नेताओं के आग्रह पर कांग्रेस के शीर्षस्थ नेताओं ने स्वामी जी से मांग की कि शुद्धि आन्दोलन से दोनों सम्प्रदायों में द्वेष फैलता है, अत: आप इसे बन्द कर दें। स्वामी जी का उत्तर था- मैं अपने प्रचारक वापिस बुला सकता हूं,यदि मुस्लिम नेता अपने प्रचारकों को वापिस बुला लें और यह वचन दें कि वे किसी हिन्दु को मुसलमान नहीं बनाएंगे। परन्तु किस में साहस था कि मुस्लिम नेताओं से यह मांग मनवा सकें। यही नेता हमारे आन्दोलन का हिन्दु मुस्लिम सौहार्द के नाम पर विरोध करते रहे। स्वामी जी अपने मार्ग से विचलित नहीं होने वाले थे। इसी राष्ट्रीय आन्दोलन की बलिवेदी पर उनका गौरवपूर्ण बलिदान हुआ।

स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान हर वर्ष आता है और हमें प्रेरणा देता है कि किस प्रकार अपने धर्म के लिए, अपनी संस्कृति के लिए बलिदान दिया जाता है? किस प्रकार कोई व्यक्ति सम्पूर्ण ऐशो-आराम से भरा जीवन छोड़कर अपना सर्वस्व अर्पण कर त्यागी और तपस्वी बन सकता है? महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के स्वप्नों को अगर वास्तव में कार्यान्वित किया है तो वे स्वामी श्रद्धानन्द जी थे। स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस मनाते हुए हमें भी प्रण लेना चाहिए कि हम भी उस महामानव के पद्चिह्नों पर चलते हुए राष्ट्र के लिए कार्य करें। आज भी देश में राष्ट्रविरोधी शक्तियां कार्य कर रही हैं। कुछ तथाकथित धर्मनिरपेक्ष लोगों एवं साहित्यकारों के द्वारा असहिष्णुता के नाम पर देश में द्वेष फैलाने का यत्न किया जा रहा है। सम्प्रदाय के आधार पर लोगों को बांटने का प्रयास किया जा रहा है। ऐसे समय में स्वामी श्रद्धानन्द जी के बलिदान से प्रेरणा लेकर ही इन राष्ट्रविरोधी ताकतों से लड़ा जा सकता है। स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का बलिदान हमें संदेश देता है कि हम राष्ट्रविरोधी ताकतों के आगे झुके नहीं अपितु उनका डटकर सामना करें।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित सभी आर्य समाजों एवं शिक्षण संस्थाओं के अधिकारियों से निवदेन है सभी अपनी-अपनी संस्थाओं में अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस अवश्य मनाएं। स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा किए गए कार्यों से लोगों से अवगत कराएं। स्वामी श्रद्धानन्द जी के बलिदान से प्रेरणा लेकर देश, धर्म और संस्कृति के लिए कार्य करें। अगर हम स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन से प्रेरणा लेकर आर्य समाज की उन्नति के लिए, राष्ट्र के लिए कार्य करेंगे तो यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धाजंलि होगी।

**-प्रेम भारद्वाज, संपादक एवं सभा महामन्त्री**

# महान आर्य समाजी स्वामी श्रद्धानन्द

*-ले० मनमोहन कुमार आर्य, 196 चुक्खूवाला रोड, देहरादून*

वैदिक धर्म एवं संस्कृत के उन्नयन में स्वामी श्रद्धानन्द जी का महान योगदान है। उन्होंने अपना सारा जीवन इस कार्य के लिए समर्पित किया। वैदिक धर्म के सभी सिद्धान्तों को उन्होंने अपने जीवन में धारण किया था। देश भक्ति से सराबोर वह विश्व की प्रथम धर्म-संस्कृति के मूल आधार ईश्वरीय ज्ञान ''वेद के अद्वितीय प्रचारकों में एक थे।'' शिक्षा जगत, राष्ट्रीय स्वतन्त्रता आन्दोलन, समाज व जाति सुधार/बिछुड़े हुए धर्म बन्धुओं की शुद्धि, दलितों के प्रति दया से भरा हृदय रखने वाले तथा उनकी रक्षा में तत्पर, आर्य समाज के महान नेताओं में से एक, आदर्श सहृदस्थी, कर्त्तव्य पालन में अपना सर्वस्व व प्राण समर्पित करने वाले अद्वितीय महापुरुष थे। उनका व्यक्तित्व ऐसा है कि जिसे जानकर प्रत्येक सात्विक हृदय वाला व्यक्ति उनका अनुयायी बन जाता है। महर्षि दयानन्द के बाद आर्य समाज और देश में उनके समान गुणों वाला व्यक्ति उत्पन्न नहीं हुआ। प्रसिद्ध आर्य वैदिक सन्यासी स्वामी डा. सत्य प्रकाश सरस्वती ने उनसे सम्बन्धित अपने कुछ संस्मरणों को प्रस्तुत करने के साथ उनके कार्यों पर अपनी राय भी दी है। इसी पर सन् 1916 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अवसर पर लखनऊ में स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती ने महात्मा मुंशीराम के दर्शन किए थे। 1914-15 में महात्मा गांधी दक्षिण अफ्रीका से भारत आए थे और जनता में गांधी जी की लोकप्रियता बढ़ रही थी। नरम दल के नेता कांग्रेस से अलग हो गए थे और उन्होंने अपनी आल इण्डिया लिबरल फैडरेशन संघटित करना आरम्भ कर दिया धा। गरम दल के व्यक्तियों के हृदय सम्राट् लोकमान्य तिलक जी थे। 8 अप्रैल 1915 को गुरुकुल कांगड़ी में महात्मा मुंशीराम के आश्रम में मिस्टर गांधी आए और ''महात्मा गांधी बन करके वहां से निकले। महात्मा मुंशीराम जी ने ही गांधी जी को गुरुकुल में पधारने पर पहली बार उनका महात्मा शब्द से सम्बोधित किया था, वह महात्मा शब्द इसके बाद आजीवन उनके नाम के साथ जुड़ा रहा। यही गांधी जी के महात्मा गांधी बनने का इतिहास है। सन् 1916 की कांग्रेस में स्वामी सत्यप्रकाश जी ने गांधी जी और मुंशीराम जी दोनों को राष्ट्रभाषा हिन्दी सम्बन्धी एक समारोह में देखा था। दोनों की वेशभूषा की रूपरेखा बराबर उनकी आंखों के सामने बनी रही, ऐसा उन्होंने अपने लेख में वर्णित किया है। तब वहां महात्मा मुंशीराम जी भव्य दाढ़ी, सुदृढ़ शरीर और गले के नीचे पीत वस्त्र और गांधी जी अपनी काठियावाड़ी पगड़ी, अंगरखा और नंगे पैर उपस्थित थे। इसके बाद स्वामी सत्यप्रकाश जी प्रयाग आ गए। वहां आर्य कुमार सभा के उत्सव पर स्वामी श्रद्धानन्द जी आए थे और तब स्वामी सत्यप्रकाश जी ने उन्हें निकट से देखा।'' स्वामी श्रद्धानन्द जी को प्रयाग में नयी सड़क के एक दुमंजिले मकान में ठहराया गया था।

स्वामी सत्यप्रकाश जी ने यह भी वर्णित किया है कि 26 दिसम्बर 1919 को अमृतसर कांग्रेस में स्वामी श्रद्धानन्द स्वागताध्यक्ष थे और पंडित मोतीलाल नेहरू अध्यक्ष। किम्वदन्ती है कि दोनों ने एक-दूसरे को पहचाना-दोनों सहपाठी थे बनारस, इलाहाबाद, आगरा या बरेली में से किसी स्थान पर। महात्मा मुंशीराम जी की प्रारम्भिक शिक्षा बरेली में हुई, 1873 में उच्च शिक्षा क्वीन्स बनारस में, 1880 और पुन: 1888 में कानूनी शिक्षा लाहौर में। महात्मा मुंशीराम जी का नाम श्रद्धानन्द सन्यास के बाद पड़ा। संन्यास उन्होंने 12 अप्रैल 1917 को मायापुर (कनखल) में लिया था। स्वामी सत्यप्रकाश जी सन् 1915-16 में इन्द्र विद्यावाचस्पति और पौराणिकों की बातें सुना करते थे, क्योंकि 1912-16 तक सनातन धर्म सभाओं की बड़ी धूम थी। स्वामी सत्यप्रकाश जी ने अपने संस्मरणों में बताया है कि सन् 1925 ई. में मथुरा में जो महर्षि दयानन्द जन्म शताब्दी मनाई गई थी। उसके अध्यक्ष स्वामी श्रद्धानन्द थे। तब तक उनका स्वास्थ्य गिर चुका ता और महात्मा नारायण स्वामी जी वस्तुत: उस समारोह के कार्यकर्त्ता अध्यक्ष थे। आनन्द भवन में होने वाली कांग्रेस की बैठकों में 1922 ई. के बाद भी स्वामी जी इलाहाबाद कई बार आए। 1921 ई. के अप्रैल मास में पंडित मोतीलाल जी की पुत्री विजयलक्ष्मी के विवाह में भी स्वामी श्रद्धानन्द जी सम्मिलित हुए थे पर मोपला काण्ड (मालाबार, केरल) के बाद श्रद्धानन्द जी कांग्रेस से धीरे-धीरे अलग हो गए।

1883 ई. के बाद स्वयं ही आर्य समाज में व्यक्तियों का प्रादुर्भाव हुआ। इन व्यक्तियों में श्रद्धानन्द का इतिहास ही आर्य समाज का इतिहास है। इस युग के अन्य लोगों में महात्मा हंसराज, पंडित गुरुदत्त, पंडित लेखराम, लाला लाजपतराय, स्वामी दर्शनानन्द और स्वामी सत्यप्रकाश जी के अनुसार स्वामी श्रद्धानन्द ने इस शती के प्रथम पाद में भारत के इतिहास में मार्मिक भूमिका निभाई। आर्य समाज में दयानन्द के बाद श्रद्धानन्द सा दूसरा व्यक्ति देखने में नहीं आया। स्वामी सत्यप्रकाश जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी की 1924 ई. में प्रकाशित 'कल्याण मार्ग का पथिक' आत्मकथा को पढ़ा, उनके पास उनका और गुरुकुल कांगड़ी में श्रद्धानन्द जी सहयोगी आचार्य रामदेव के द्वारा सम्पादित 'द आर्य समाज एण्ड इटस डिटैक्टर्स-ए विण्डिकेशन' प्रसिद्ध ग्रन्थ था। 'दु:खी दिल की पुरदर्द दास्तान' उन्होंने नहीं पढ़ी। (उर्दू में लिखित यह ग्रन्थ आर्य समाज के आन्तरिक विग्रह की कष्ट कथा है। इसका अनुवाद हरिद्वार निवासी हिन्दी कवि श्री सुमन्त सिंह आर्य ने किया है जो प्रकाशन की प्रतीक्षा में है। कुछ विद्वान इसमें समाहित आलोचनाओं के कारण इसके प्रकाशन की आवश्यकता नहीं समझते। हमारी अनुवादक महोदय से भेंट हुई है।

उन्होंने बताया कि यह ग्रन्थ उन्होंने प्रकाशनार्थ आर्य विद्वान डा. महावीर अग्रवाल जी को दिया हुआ है। आस्ट्रेलियाई प्रो. स्वामी सत्यप्रकाश जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी पर कई टिप्पणियां की हैं। वह लिखते हैं कि गुरुकुल के अनगिनत स्नातकों के कुलगुरु महात्मा मुंशीराम थे, न कि श्रद्धानन्द। मुंशीराम और श्रद्धानन्द तो दो अलग व्यक्ति हैं। मुंशीराम के रूप में वे महात्मा थे, गांधी के अत्यन्त निकट, गुरुकुलीय प्रणाली के उन्नायक शिक्षा के क्षेत्र में अनन्य प्रयोग तथा टैगोर की समकक्षता के शिक्षाशास्त्री। दूसरा उनका स्वरूप स्वामी श्रद्धानन्द का रहा। सम्प्रदायवादिता मिश्रित राष्ट्र उलझनों में फंसे हुए कभी मालवीय के साथ, कभी महासभा के साथ, कभी उनसे दूर भागते हुए अत्यन्त विवादास्पद व्यक्तित्व, कभी-कभी निर्वाचनों की उलझनों में फंस जाने वाले व्यक्ति। उसका उन्हें पुरस्कार मिला। 23 दिसम्बर, 1926 ई. को सायंकाल 4 बजे दिल्ली में अब्दुल रशीद की गोलियों से बलिदान। वे सदा के लिए अमर हो गए। अंग्रेजों की संगीनों के सामने छाती खोलकर खड़ा होने वाला वीर राष्ट्रभक्त सन्यासी श्रद्धानन्द का एक यह तेजस्वी रूप था। महर्षि दयानन्द के बाद वैदिक धर्म के 7 मार्च, 1897 को एक विधर्मी आततायी द्वारा प्रथम शहीद पंडित लेखराम की पंक्ति में खड़ा कर देने वाला ऋषि दयानन्द के असीम भक्त स्वामी श्रद्धानन्द ने गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना की और उसे अपने खून से सींचा।

23 दिसम्बर को स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस है। अत: इस अवसर पर उनके पावन चरित्र का अध्ययन कर अपने जीवन को सुधारा व पुण्यकारी बनाया जा सकता है। धर्म की वेदी पर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी का जीवन चरित्र व उनके ग्रन्थों का अध्ययन कर ही उनको श्रद्धांजलि दी जा सकती है। स्वामी श्रद्धानन्द जी के प्राय: सभी ग्रन्थों को 'श्रद्धानन्द ग्रन्थावली' के नाम से लगभग 27 वर्ष पूर्व 11 खण्डों में प्रकाशित किया गया था। इसका नया भव्य एवं आकर्षक संस्करण दो खण्डों में 'विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द, 4408 नई सड़क, दिल्ली' से इसी माह प्रकाशित किया गया है। हम पाठकों को इसे मंगाकर पढ़ने की संस्तुति करते हैं। आईए, स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन व कार्यों को जानकर उनसे प्रेरणा ग्रहण करें और वैदिक धर्म व संस्कृति की सेवा कर अपने जीवन को कृतार्थ करें।

# स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान (23 दिसम्बर 1926 ई.)

*-ले० पंडित उम्मेद सिंह विशारद वैदिक प्रचारक, गढ़ निवास मोहकमपुर (देहरादून)*

स्वामी श्रद्धानन्द जी का नाम जनता में प्रसिद्ध है। संन्यासाश्रम से पहले इनका नाम महात्मा मुन्शीराम जी था। जब इन्होनें अपनी सब सम्पत्ति का त्याग कर दिया, और अधिकांश में गुरूकुल कांगड़ी को वह सम्पत्ति दे दी और उनके पास अपने और अपने पुत्रों के लिए कुछ बाकी न रहा, तब उन्हें आर्यजनता ने महात्मा शब्द से पहचाना। इससे पहले वे लाला मुन्शीराम के नाम से ही प्रख्यात थे।

महात्मा जी का जन्म जालन्धर जिले के तलवन ग्राम में सन 1856 ई. में हुआ था। इनके पिता लाला नानकचन्द जी उतरप्रदेश में पुलिस के बड़े अफसर थे। वे बनारस, बरेली आदि कई बड़े शहरों में पुलिस कोतवाल के पद पर रह चुके थे। वे नौकरी निवृत्त होकर अपने गांव में आकर रहने लगे थे।

तलवन ग्राम समृद्ध था। उसमें मकान थे। दो कुएं और एक मंदिर था। एक भाग में ब्राहमण क्षत्रिय लोगों की बस्ती थी और दूसरे भाग में उसका बाजार था जिसमें प्राय सभी चीजें मिलती थीं। तीसरे बाग में काश्तकार प्राय: अराई मुसलमान रहते थे। तलवन उस समय पुराने विचारों का जबरदस्त गढ़ था।

श्री मुन्शीराम जी का गृहस्थाश्रम में यह स्वभाव था कि हरेक चीज को बड़ी मात्रा में रखा करते थे। उस समय कौलर, नकटाई आदि सब कुछ पहनते थे। परन्तु सिर के ऊपर साफा या फैल्ट कैप होती थी। अंग्रेजी टोप उन्होंने कभी नहीं पहना। वे अपने वकालत के दिनों में भी सुगन्धित तेल लगाकर बाहर नहीं जाते थे। जल्दी सोना और जल्दी उठना सर्वदा उनके जीवन का अंग बना रहा। उनका सर्वदा यही विचार रहा कि यथासम्भव पुरानी रस्मों को तोड़ा जाये।

इसी के कारण वह ऐसी शिक्षा प्रणाली चाहते थे। जिस शिक्षा में शिक्षित हुए भारत के नवयुवक पुराने रूढ़ी रिवाजों के अलग होकर वैदिक शिक्षा प्रणाली के अनुसार शिक्षित हों। इन विचारों की और भी अधिक पुष्टि हो गई जब उन्होंने बरेली में महर्षि स्वामी दयानन्द के व्याख्यान सुने और उनसे ईश्वर धर्म आदि के सम्बम्ध में अनेक विचार परिर्वतन किये। इससे उनके जीवन में महान् क्रांति हुई। उन्होने सत्यार्थप्रकाश पढ़ा और उसमें बताई हुई गुरूकुल शिक्षा प्रणाली का निर्देश और आवश्यकता प्राप्त की। उनको इस विचार ने इतना प्रेरित किया कि जब तक भारतीय विद्यार्थी नवीन अंग्रेजो शिक्षा-प्रणाली को छोड़कर पुरानी वैदिक आर्ष-प्रणाली के पठन-पाठन का अभ्यास नहीं करेंगे तब तक भारतीय युवकों में जागृति नहीं आ सकती।

इतिहास का अध्ययन करते हुए उन्होंने भारत की पराधीनता का कारण जान लिया कि भारतीय युवकों को अंग्रेजी शिक्षा के द्वारा ऐसा बनाया जा रहा है जिससे भारतीय युवक देखने में तो भारतीय हों परन्तु अन्दर से आचार व्यवहार और विचारों में पूरे अंग्रेज हों।

अंग्रेजी शिक्षा के परिणाम से नवयुवकों में मघ-मांस का प्रचार हो रहा था। सिगरेट और बीड़ी का व्यसन लोगों मे घुस गया था। अफीम, भांग, चरस आदि मादक द्रव्यों में नवयुवक बंधते जा रहे थे। शिक्षित लोग मिथ्याभिमान के कारण अशिक्षितों से घृणा और भेदभाव सीख चुके थे। युवकों में अशिष्टता असभ्यता और दुराचार आदि के रूप में अंग्रेजी शिक्षा ने युवकों के हृदयों को काबू कर लिया था। संयम और सदाचार शब्द असम्भव जैसी वस्तुएं समझी जाने लगी थीं। कलियुग में ब्रह्मचर्य जैसी कोई वस्तु भी हो सकती है इस पर से लोगों का विश्वास हट गया था। इस प्रकार महात्मा जी ने यह आवश्यक समझा कि सदाचार का प्रचार करने के लिए सधर्म प्रचारक अखबार निकाला जाये, और गुरूकुल शिक्षा प्रणाली के लिए एक संस्था स्थापित की जाए।

सधर्म प्रचारक अखबार उर्दू भाषा मे प्रकाशित होता था। परन्तु शिक्षा प्रणाली के लिए गुरूकुल की स्थापना हुई। उसके कुछ ही वर्ष पश्चात् सधर्म प्रचारक शुद्ध हिन्दी भाषा में और देवनागरी लिपि में कर दिया गया। धार्मिक विचारों के प्रचार के लिए सम्पादकीय मुख्य लेख महात्मा जी का अपना होता था और साथ ही भारतीय जनता में गुरूकुल शिक्षा प्रणाली के सम्बन्ध में प्रेरणात्मक अनेक लेख होते थे।

महात्मा जी ने अपने दृढ़ संकल्प के अनुसार महान् कार्य करने के लिए अपनी वकालत छोड़ दी और आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रधान पद भी छोड़ दिया तथा उन्होंने प्रतिज्ञा की कि जब तक (30,000) (तीस हजार) रुपया इकट्ठा नहीं कर लूंगा तब तक घर में पांव नहीं रखूंगा। उनके अनेक मित्रों ने, आर्यबन्धुओं ने उनको बहुत समझाया कि यह कार्य नहीं हो सकेगा और ऐसी प्रतिज्ञा न करे। परन्तु वे दृढ़प्रतिज्ञ, और आशावादी और ईश्वर पर पूर्ण श्रद्धा रखने वाले व्यक्ति थे। उन्होंने किसी की बात नहीं सुनी और अपने कार्य में दत्तचित होकर लग गये। कुछ ही दिनों में उनको तीस हजार रूपये प्राप्त हो गए। देश में शिक्षा सम्बन्धी क्रांति होने वाले थी। परमेश्वर ने उनकी सहायता की। कांगड़ी ग्राम की भूमि प्राप्त होने पर गंगा के तट पर निर्जन वन में 1902 में गुरूकुल की स्थापना कर दी।

साधारण जनता के सामने जो प्रतिनिधि सभा के लोग थे और डी. ए. वी. कालेज में अथवा अंग्रेजी शिक्षालयों में पढ़े हुए थे, तथा आर्यसमाजों के सभासद् मंत्री और प्रधान भी थे। उन सब को यहीं चिंता थी कि निर्जन वन में कौन अपने लड़कों को भेजेगा, कैसे वहां के लड़कों का भरण-पोषण होगा, इत्यादि अनेक संशयवाली बातों से महात्मा जी के मन को ढीला करने का प्रयत्न किया जाता था परन्तु महात्मा जी के हृदय में परमेश्वर पर अटूट श्रद्धा थी और स्वामी दयानन्द जी के सत्यार्थ प्रकाश से उनको अटल प्रेरणा मिल चुकी थी। जिससे उन्होंने निर्जन वन में बैठकर गुरूकुल जैसी महान् शिक्षण संस्था को आदर्श देश-देशान्तर में फैलाया। उनको सहायक भी मिल गये और भारत के सभी प्रान्तों के बच्चे भी इकट्ठे हो गये कार्य बड़ी सफलता के साथ सम्पन्न होने लगा।

आर्य समाजियों के अतिरिक्त पौराणिकों ने भी गुरूकुल शिक्षण में बड़ा सहयोग प्रदान किया। उस समय के संस्कृत पढ़ाने और व्याकरण, दर्शनशास्त्र आदि पढ़ाने वाले प्राय: सभी पौराणिक पंडित थे। महात्मा जी ने एक विद्वान को काशी से तथा अन्य स्थानों से ला-ला कर जमा किया था। वे बड़े प्रेम के साथ ब्रह्मचारियों को शिक्षण दिया करते थे।

एक बार एक कट्टर पौराणिक गुरुकुल देखने के लिए आ गया। उन्होंने यह जानकर बड़ा आश्चर्य प्रकट किया कि चारों वर्णों के बालक एक ही पंक्ति में एक आसन पर बैठकर भोजन करते हैं। यह अच्छा नहीं। महात्मा जी ने कहा हमें तो कोई भेद नहीं दिखता। अभी तो ये शिक्षा ग्रहण करने वाले बालक हैं। शिक्षा ग्रहण करके आगे जैसे ये अपने कर्म दिखलाएंगे, वैसे सबके सामने आ जाएंगे। अच्छा मैं बालकों को एक पंक्ति में खड़ा कर देता हूं। आप बालकों में से बता दीजिए कौन ब्राह्मण है कौन शूद्र है ? पंडित जी ने जन्मना शूद्र बालक थे उनको तो ब्राह्मण बतला दिया और जो ब्राह्मण कुल में उत्पन्न हुए थे उन्हें शूद्र बता दिया। सब लोग हंस पड़े।

महात्मा जी ने कहा कि जिन को आपने शूद्र बताया है वे तो ब्राह्मण कुल में उत्पन्न हुए हैं और जिन्हें ब्राह्मण बतलाया है वे शूद्र कुल में उत्पन्न हुए हैं। पंडित जी बड़े लज्जित हुए। सचमुच बाहर के रंगरूप से कोई वर्ण नियत नहीं होता। प्रत्युत, गुण कर्म से वर्ण नियत होता है। इस प्रकार देश में प्रचलित रूढ़िवाद पर गुरुकुल शिक्षा प्रणाली ने बड़ा भारी आघात किया हैं और भारतीय बालकों में नवजीवन का संचार किया है कि वे विद्या, बुद्धि और पुरुषार्थ के द्वारा जीवन में आगे बढ़ सकते हैं। जबकि उनको आगे बढ़ने का मार्ग नहीं मिलता था। इस प्रकार गुरुकुल शिक्षा प्रणाली ने भारतीय जीवन में क्रान्ति पैदा कर दी है। महात्मा जी ने गुरुकुल शिक्षा प्रणाली स्थापित करके ब्रह्मचर्य के नियमों को मुख्य रूप से अभ्यास कराने का प्रयत्न किया है। प्राचीन गुरुकुल में तो ब्रह्मचारी नंगे सिर रहते थे। छाता, जूता आदि कभी धारण नहीं करते थे। चाहे गर्मी, सर्दी हो या वर्षा हो। तपस्यामय जीवन था। कोई रोगी हो जाता तो उसकी सेवा करने के लिए ब्रह्मचारी हर समय उद्यत होते थे। सब का आपस में प्रेममय सम्बन्ध था। इन सबके पीछे एक ही बात विशेषत: काम करती थी कि महात्मा जी प्रतिदिन ब्रह्मचारियों को सन्मार्ग पर चलने का उपदेश देते रहते थे। **(क्रमश:)**

## पारितोषिक वितरण समारोह

वैदिक शिक्षा परिषद फाजिलका द्वारा आयोजित ''वैदिक ज्ञान परीक्षा एवं रंग भरो प्रतियोगिता'' का पारितोषिक वितरण समारोह आर्य समाज मन्दिर फाजिल्का में 30 नवम्बर को बड़े हर्षोल्लास से सम्पन्न हुआ। जिसकी अध्यक्षता श्री अशोक जैरथ (नगर पार्षद) ने की। मुख्यातिथि के रूप में डा. सुरेश रत्न मिगलानी एवं डॉ. सरोज रत्न मिगलानी अबोहर से पधारे। विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री जगदीश सेतिया (प्रधान शिवपुरी प्रबन्धक कमेटी फाजिल्का) एवं श्री प्रदीप अरोड़ा प्रिंसीपल डी. ए. वी. सी. से. स्कूल फाजिलका सम्मिलित हुए।

परीक्षा संयोजक वेद प्रकाश शास्त्री ने बताया कि वैदिक ज्ञान परीक्षा प्राइमरी, मिडल, मैट्रिक, सैकण्डरी एवं कालेज स्तरीय पांच ग्रुपों में ली गई जिसमें 24 स्कूल और 6 कालेजों के 1500 छात्र/छात्राएं सम्मिलित हुए।

रंग भरो प्रतियोगिता में 800 प्रतियोगी सम्मिलित हुए। यह प्रतियोगिता नर्सरी, एल. के. जी., यू. के. जी., पहली और दूसरी कक्षा तक पांच ग्रुपों में हुई।

सभी ग्रुपों में प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त छात्र/छात्राओं को पुरस्कृत किया गया। सर्वोच्च सहभागिता का गौरव ''रंग भरो प्रतियोगिता'' में सर्वाहितकारी विद्या मन्दिर फाजिलका ने प्राप्त किया। वैदिक ज्ञान परीक्षा में यह गौरव डी. ए. वी. शिक्षा महाविद्यालय अबोहर को प्राप्त हुआ। परीक्षा में सहयोगी शिक्षकों, पर्यवेक्षकों, परीक्षकों को सम्मानार्थ स्मृति चिन्ह प्रदान किए गए।

शास्त्री जी के अनुसार परीक्षा का उद्देश्य पूर्ण धर्म के यथार्थ स्वरूप से परिचय, नैतिक-चारित्रिक विकास, राष्ट्र के प्रति निष्ठा एवं दृढ़ विश्वास, अन्धविश्वास, रूढ़िवाद, छुआछात, भेदभाव सदृश कुरीतियों के प्रति जागृति उत्पन्न करना, धर्म के नाम पर फैली भ्रान्त धारणाओं के प्रति वैज्ञानिक सोच जागृत करना है।

समारोह के अध्यक्ष श्री अशोक जैरथ, मुख्यातिथि, डॉ. सुशील रत्न मिगलानी एवं डॉ. सरोज रत्न मिगलानी तथा विशिष्ट अतिथि श्री जगदीश सेतिया एवं श्री प्रदीप अरोड़ा ने छात्र/छात्राओं के उज्जवल भविष्य की कामना की। डॉ. सुशील वर्मा ने स्वागताध्यक्ष के रूप में अपना उत्तरदायित्व पूर्णरूपेण निभाया। प्रसिद्ध शिक्षाविद् डॉ. अमृरलाल बाघला ने छात्र/छात्राओं को शुभाशीष प्रदान किया।

समारोह के अध्यक्ष, मुख्यातिथि, विशिष्ट अतिथि को परिषद की ओर से सम्मानार्थ स्मृति चिन्ह प्रदान करते हुए समारोह की शोभा बढ़ाने हेतु आभार व्यक्त किया गया। अन्त में शास्त्री जी ने सभी छात्रों, शिक्षकों, विद्यालयों का हार्दिक आभार एवं धन्यवाद व्यक्त किया।

**-वेद प्रकाश शास्त्री**

## चेतना की प्रशंसनीय उड़ान

गांधी आर्य सीनियर सैकंडरी स्कूल, बरनाला से बाहरवीं प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण मेधावी छात्रा चेतना सिंगला, जो कि अल्पदृष्टि (80 प्रतिशत नेत्रहीन) वाली है। चेतना को सर्वश्रेष्ठ अल्पदृष्टि महिला राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित किया गया। अथक परिश्रमी चेतना ने सिद्ध कर दिया कि यदि हौंसले बुलन्द हों तो असम्भव को भी सम्भव किया जा सकता है। स्कूल उसकी इस उपलब्धि पर गौरवान्वित है। चेतना की इस अभूतपूर्व उपलब्धि पर स्कूल प्रबन्धक समिति ने उसे सम्मानित करने की घोषणा की है।

चेतना ने 'स्टेट बैंक ऑफ पटियाला में सम्मानित पद ग्रहण किया है। साथ ही वह टी. वी. पर कुकरी शो भी करती है।

स्कूल के डायरैक्टर डा. एच. कुमार कौल ने चेतना को बधाई देते हुए कहा कि स्कूल और समाज को ऐसी छात्रा पर गर्व है और सभी के लिए प्रेरणा स्रोत है।

**-प्रो. सुमन**

## महान नेता--स्वामी श्रद्धानन्द

*-पंडित नन्दलाल निर्भय सिद्धान्ताचार्य पत्रकार*
*आर्य समाज बहीन, जनपद पलवल (हरियाणा)*

*जो मानव संसार में, करते अच्छे काम।*
*कर जाते हैं विश्व में, अपना ऊंचा नाम।*
*अपना ऊंचा नाम, धन्य हैं उनका जीवन।*
*करते हैं यशमान, प्रेम से उनका सज्जन।*
*सुख चाहो यदि मीत, रात-दिन करो भलाई।*
*पाओगे सम्मान, मार्ग है यह सुखदाई।*

*स्वामी श्रद्धानन्द जी, नेता थे गुणवान।*
*भारत मां की कर गए, जग में ऊंची शान।*
*जग में ऊंची शान, प्रभु के भक्त निराले।*
*देशभक्त बलवान, बहादुर थे मतवाले।*
*ऐसा नेता यहां, न अब तक कोई आया।*
*जिसने निज सर्वस्व, देश की भेंट चढ़ाया।*

*जगतगुरु दयानन्द के, वे थे शिष्य महान।*
*अंग्रेजों से वो लड़े, जाने सकल जहान।*
*जाने सकल जहान, गजब के थे सन्यासी।*
*भूलेंगे न कभी, सन्त को भारतवासी।*
*कांग्रेस अध्यक्ष, बने थे काम किया था।*
*नेता थे निर्भीक, जगत में नाम किया था।*

*पापी ईसाई, यवन, करते थे अन्याय।*
*भारतीयों पर रात-दिन, जुल्म रहे थे ढाय।*
*जुल्म रहे थे ढाय, कुकर्मी अत्याचारी।*
*आतंकित थे सुनो, भारती सब नर-नारी।*
*अद्भुत शुद्धि चक्र, चलाया था स्वामी ने।*
*अंग्रेजों का राज्य, हिलाया था स्वामी ने।*

*मोहनदास गांधी अगर, करते नहीं विरोध।*
*हो जाता संसार को, वेद धर्म का बोध।*
*वेद धर्म का बोध, आर्य जग बन जाता।*
*पापी पाकिस्तान, जगत में नजर न आता।*
*वेद विरोधी दुष्ट, नास्तिक कहीं न होते।*
*राम कृष्ण के पुत्र-पुत्रियां सुख से सोते।*

*भारत के नेता अगर, वेद धर्म ले जान।*
*स्वामी श्रद्धानन्द की, शिक्षाएं ले मान।*
*शिक्षाएं ले मान, सत्य पथ को अपनाएं।*
*वीर बहादुर बनें, राष्ट्र की शान बढ़ाएं।*
*भारत जग का गुरु, पुनः फिर बन जाएगा।*
*भारत का यशगान, जगत सारा गाएगा।*

## सूचना

जिला आर्य सभा के तत्वावधान में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस समारोह का भव्य आयोजन रविवार 27 दिसम्बर 2015 को प्रात: 10.00 बजे से 1.00 बजे तक आर्य सी. सै. स्कूल लुधियाना (लड़कों का) में किया जा रहा है। यज्ञ व भजनों के उपरान्त डा. वीरेन्द्र कुमार अलंकार चण्डीगढ़ का प्रवचन होगा। आप सभी परिवार सहित सम्मिलित होकर धर्म लाभ उठाएं।

**-राजेश शर्मा प्रधाना, विजय सरीन महामंत्री**

# भारत के राष्ट्रीय नेताओं की स्वामी श्रद्धानन्द जी को श्रद्धांजलियां

**भारत के प्रथम राष्ट्रपति डा. राजेन्द्र प्रसाद जी स्वामी श्रद्धानन्द जी के सम्बन्ध में लिखते हैं-** 'स्वामी श्रद्धानन्द जी स्पष्टवादिता और निर्भीकता के मूर्तिमान स्वरूप थे। वह निर्भीकता जिस प्रखर ज्योति के साथ अंग्रेजी सरकार के सामने चमकती थी, उसी ज्योति के साथ औरों के मुकाबले में भी अपनी छटा दिखलाती थी। जो लोग काले कानून के विरोधी आन्दोलन के समय दिल्ली के चांदनी चौंक में भी मौजूद न थे, उनके हृदय पर भी स्वामी जी की वह मूर्ति अमिट रूप से चित्रित है जो सीने को अंग्रेजी गोलियों और संगीनों के सामने खोल कर हृदय में शुद्धता और निर्भीकता दिखलाती है। उसी शुद्धता ने जामा मस्जिद के मिम्बर पर से उपदेश करवाया और हिन्दू, मुस्लिम एक्य का मनोरम दृश्य दिखलाया और उसी दृढ़ता, सत्य निष्ठा, स्पष्टवादिता और निर्भीकता ने आततायी के हाथों शरीर पात भी करवाया। भारत के आधुनिक इतिहास में स्वामी जी का स्थान पथ प्रदर्शक का है और जिनको साक्षात्कार का सौभाग्य नहीं प्राप्त हुआ उनके लिए उनका जीवन वृत्तान्त पढ़ना ही मनुष्य की उन्नति के मार्ग पर अग्रसर करने वाला है। स्वामी जी ने गुरुकुल की स्थापना करके कुछ ब्रह्मचारियों के शिक्षण का ही प्रबन्ध नहीं किया उनका जीवन सारे देश के लिए एक महान् गुरुकुल का काम कर रहा है और करता रहेगा।''

**भारत के पहले उपप्रधान मन्त्री सरदार बल्लभ भाई पटेल स्वामी जी के सम्बन्ध में लिखते हैं-** ''स्वामी श्रद्धानन्द जी की याद आते ही 1919 का दृश्य मेरी आंखों के सामने खड़ा हो जाता है। सरकारी सिपाही फायर करने की तैयारी में हैं। स्वामी जी छाती खोलकर सामने हो जाते हैं और कहते हैं, लो चलाओ गोलियां। उनकी उस वीरता पर कौन मुग्ध नहीं हो जाता ? मैं चाहता हूं कि उस वीर सन्यासी का स्मरण हमारे अन्दर सदैव वीरता और बलिदान के भावों को भरता रहे।''

**महात्मा गांधी जी के शब्दों में-** स्वामी श्रद्धानन्द जी का स्मरण कौन भूल सकता है ? उनका सच्चा स्मरण तो अस्पृश्यता जड़ मूल से निकाल कर ही हो सकता है।

**भारत के प्रथम प्रधानमन्त्री स्वर्गीय पण्डित जवाहर लाल नेहरू लिखते हैं-** ''विशुद्ध शारीरिक साहस का काम किसी भी अच्छे काम में शारीरिक कष्ट सहने और मृत्यु तक की भी परवाह न करने वाली हिम्मत का मैं हमेशा प्रशंसक रहा हूं। स्वामी श्रद्धानन्द में निर्भीकता की आश्चर्यजनक मात्रा थी। लम्बा कद, शाही शक्ल, सन्यासी के वेश में बहुत उम्र हो जाने पर भी बिल्कुल सीधी, चमकती हुई आंखें और चेहरे पर कभी-कभी दूसरों की कमजोरी पर आने वाली मन्यु की छाया का गुजरना मैं इस सजीव तस्वीर को कैसे भूल सकता हूं ? अक्सर वह मेरी आंखों के सामने आ जाती है।

**ब्रिटिश सरकार के तत्कालीन प्रधानमन्त्री सर रेम्जे मैकडानल्ड की दृष्टि मे स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज-** 'यदि वर्तमान काल का कोई कलकार ईसा की मूर्ति बनाने के लिए कोई जीवित माडल सामने रखना चाहे तो मैं इस भव्य मूर्ति (मुंशीराम) की ओर इशारा करूंगा। यदि कोई मध्यकालीन चित्रकार सैण्ट पीटर के चित्र के लिए नमूने मांगेगा तो मैं उसे इस जीवित मूर्ति के दर्शन करने की प्रेरणा करूंगा।

**गोहाटी में आयोजित 1926 ई. में कांग्रेस अधिवेशन में महात्मा गांधी द्वारा प्रस्तुत प्रस्ताव-** यह कांग्रेस स्वामी श्रद्धानन्द जी की कायरता और कपटपूर्ण हत्या पर रोष और क्षोभ प्रकट करती है। भारत माता के एक देशभक्त और वीर सपूत की दु:खद मृत्यु से ऐसी क्षति हुई है जिसकी पूर्ति सम्भव नहीं है। उनके जीवन की विशिष्टताएं अपने देश और धर्म की सेवा पर अर्पित रहीं। उन्होंने निर्भीकता और दृढ़ता के साथ असहायों, पतितों और दीन दु:खियों को सहारा दिया।

**श्री साधु टी. एल. वासवानी ने कहा था-** स्वामी श्रद्धानन्द ! वे लक्ष्य पर पहुंचे उन्होंने सब कुछ पाया। वह अपना नाम इतिहास में बहुत गहरा अंकित कर गए, उन्हें मेरी श्रद्धांजलि। प्रत्येक जीवन का कोई चिन्ह होता है। उनके जीवन का चिन्ह था सेवा। उनकी स्मृति नए जीवन को जगा देवे और राष्ट्र के युवकों में नई रूह फूंक देवे। दीन दलितों की इस सेवा के लिए जो धर्म और आजादी दोनों का दिल है हमसे अलग होकर भी वह मरे नहीं। वह तो अब भी बोल रहे हैं और उन सबको जिन्हें मैं सुना सकता हूं उस शरीर का वह सन्देश सुनाना चाहता हूं जो इस क्षण मुझे याद आ रहा है। यह वह सन्देश है जिसमें प्राचीन, नवीन का अभिनन्दन करता है। धन्य है वह जीवन जो बलि में प्रज्जवलित हो।

**लाला लाजपतराय जी ने कहा था-** स्वामी जी की हड्डियों से यमुना के तट पर एक विशाल वृक्ष उत्पन्न होगा जिसकी जड़ें पाताल में पहुंचेगी। शहीदों के खून से नए शहीद पैदा होते हैं।

**महर्षि अण्णा साहब कर्वे ने कहा था-** स्वामी जी पहले व्यक्ति थे जिन्होंने भारत में आध्यात्मिक और उच्च शिक्षा के माध्यम के रूप में स्वदेश भाषा को प्रयुक्त किया। अब तो इस सिद्धान्त का अनेक विश्वविद्यालयों ने अनुसरण कर लिया है। वे स्वामी जी ही थे जिनसे प्रेरणा पाकर मैंने अपनी भारतीय महिला विद्यापीठ की समस्त परीक्षाओं में स्व-भाषा को माध्यम बनाया।

**दीन बन्धु सी. एफ. एन्ड्रेज ने कहा था-** इस जीवन में बहुत कम ऐसे व्यक्ति हैं जिन्हें मैं उतना प्रेम करता हूं जितना स्वामी श्रद्धानन्द जी को करता था। हमारी स्वच्छ निर्मल तथा प्रगाढ़ मैत्री में कदाचित ही धुंधलापन आया हो। उनके उच्च चरित्र की ही महत्ता थी जिसने उनके प्रति मेरे प्रेम को सच्चा और गहरा बनाया था। यह जान कर मैं बहुत प्रसन्न होता था कि स्वामी जी मुझसे प्रेम करते हैं।

आज मैं 20 वर्ष पूर्व के उस दिन की ओर आंख उठा कर देखता हूं जब मैंने पहले पहल महात्मा गांधी जी से गुरुकुल हरिद्वार के उस तपस्वी महात्मा मुन्शीराम जी के सम्बन्ध में बातचीत की थी। दक्षिण अफ्रीका के प्रिटोरिया में जब हम आपस में बातचीत कर रहे थे महात्मा गांधी, गुरुकुल और महात्मा मुन्शीराम जी के प्रति प्रकट किए गए मेरे उत्साह पर बीच-बीच में मुस्करा उठते थे। महात्मा गांधी उस समय की प्रतीक्षा में थे जब कि वह गुरुकुल को देखने का प्रसन्नतादायक अवसर प्राप्त करेंगे। हम दोनों ने यह प्रतिज्ञा की थी कि यदि सम्भव हुआ तो हम दोनों एक साथ ही महात्मा मुन्शीराम जी से भेंट करेंगे।

## गायत्री जाप

*-ले० श्रीमती सुशीला भगत*

करो गायत्री जाप मनुआ धुल जाएगा।
मारो ज़ोर से थाप फाटक खुल जाएगा।
अमृत वेले मन्दिर आओ
धीरे-धीरे कदम बढ़ाओ
मन में करो आलाप, मनुआ धुल जाएगा।
करो गायत्री जाप.....
चारों वेदों में यह आया
राम-शाम ने इसको गाया
पढ़ के देखो आप, मनुआ धुल जाएगा।
करो गायत्री जाप.....
सौ वर्ष तक जीना चाहो
अमृत रस तुम पीना चाहो
पी के देखो आप, मनुआ धुल जाएगा।
करो गायत्री जाप.....
आनन्द स्वामी को आनन्द आया
प्रभु आश्रित ने प्रभु को पाया
होता मेल-मिलाप, मनुआ धुल जाएगा।
करो गायत्री जाप.....
मंगल कामना पूर्ण करती
सबकी झोली खुशियों से भरती
श्वास-श्वास तू नाप, मनुआ धुल जाएगा।
करो गायत्री जाप.....
आशानन्द को कष्ट जो आए
गायत्री मां की गोदी जाए
दूर होए संताप, मनुआ धुल जाएगा।
करो गायत्री जाप मनुआ धुल जाएगा।
मारो ज़ोर से थाप फाटक खुल जाएगा।

# वेदवाणी
# सर्वद्रष्टा

**य एक इत् तमु ष्टुहि कृष्टीनां विचर्षणिः।**
**पतिर्जज्ञे वृषक्रतुः॥** -ऋ० ६।४५।१६

**ऋषिः-बार्हस्पत्यः शंयुः॥ देवता-इन्द्रः॥ छन्दः-निचृद्गायत्री॥**

**विनय-**हे मनुष्य! तू किस-किसकी स्तुति करता फिरता है ? संसार में तो एक ही स्तुति के योग्य है। संसार में हम मनुष्यों का एक ही पति, पालक और रक्षक है। हे मनुष्य! तू न जाने किस-किसको अपना पालक समझता है और उस उसकी स्तुति करने लगता है। कहीं तू रुपए-पैसे वाले व्यक्ति को अपना रक्षक समझता है, कहीं तू किसी लब्धप्रतिष्ठ रोब दाब वाले व्यक्ति को अपना स्वामी बनाकर रहता है, कहीं तू किसी दार्शनिक व कवि की प्रज्ञा व प्रतिभा के स्तुति-गीत गाने लगता है, उनके ज्ञान व कवित्व पर तू मोहित रहता है। संसार में ऐसे भी मनुष्य बहुत हैं जो किन्हीं जीवित व जीवरहित आकृतियों के सौन्दर्य को देखकर ही ऐसे मोहित हो जाते हैं कि उनका मन उस सौन्दर्य की प्रशंसा करता नहीं थकता, परन्तु संसार में मनुष्य की स्तुति के पात्र बहुत नहीं हैं। एक ही है, केवल एक ही है और वह इन सब स्तुत्य वस्तुओं का एक स्रोत है। सैंकड़ों की स्तुति न कर-इन शाखाओं की स्तुति करने से कल्याण नहीं होता-रक्षा नहीं मिलती। रूप, रस आदि ऐन्द्रियक विषयों की स्तुति तो मनुष्य का विनाश ही करती है, पालन कदापि नहीं। इनकी स्तुति तो अति-अज्ञानी पुरुष ही करते हैं, परन्तु जो संसार में हमारे अन्य रक्षा करने वाले बल, ज्ञान और आनन्द हैं (बली, ज्ञानी और सुखी लोग हैं) वे भी 'विचर्षणि', 'वृषक्रतु' नहीं हैं, उनमें ज्ञान और बल पर्याप्त नहीं है। संसार के ये सब बल, ज्ञान और आनन्द तो उस एक सच्चिदानन्द, महासूर्य की क्षुद्र किरण मात्र हैं। इन किरणों की स्तुति करने से अपने को बड़ा धोखा खाना पड़ेगा। हे मनुष्य! ये संसार के क्षुद्र बल और ज्ञान मनुष्य का पालन न कर सकेंगे, ये बीच में ही छोड़ देंगे। इनमें पूरा ज्ञान और बल नहीं है, अतः इनमें आसक्त होकर इनकी स्तुति मत कर। स्तुति उस 'मनुष्यों के एक पति' की कर, जो 'विचर्षणि' होता हुआ पालक है और 'वृषक्रतु' होता हुआ पालक है। वह एक-एक मनुष्य को विशेषतया देख रहा है। प्रत्येक मनुष्य को और उसके सब संसार को वह इतनी उत्तमता से देख रहा है कि प्रत्येक मनुष्य यही अनुभव करेगा कि उस मेरे प्रभु को मानो एकमात्र मेरी चिन्ता है और उस पालक पति का एक-एक क्रतु, एक-एक संकल्प, एक-एक कर्म ऐसा 'वृष' अर्थात् बलवान् है कि उसकी सफलता के लिए उसे दोबारा संकल्प व यत्न करने की आवश्यकता नहीं होती। हे मूर्ख मनुष्य! अपने उस 'पति' की ही स्तुति कर, उसकी सैंकड़ों किरणों की स्तुति छोड़कर उस वास्तविक सूर्य की ही स्तुति कर, उस एक की ही स्तुति कर। **-वैदिक विनय से साभार**

## वर्ष 2016 के नए कैलेण्डर मंगवाएं

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, चौक किशनपुरा जालन्धर द्वारा प्रति वर्ष हजारों की संख्या में नव वर्ष के कैलेण्डर महर्षि दयानन्द के चित्र के साथ देसी तिथियों सहित छपवाए जाते हैं। गत कई वर्षों से आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब वैदिक साहित्य आधे मूल्य पर आर्य जनता को उपलब्ध करवा रही है। इसी प्रकार सन् 2016 के महर्षि दयानन्द सरस्वती के चित्र वाले कैलेण्डर भी आधे मूल्य पर आर्य जनता को दिए जाएंगे। पिछले वर्ष की भान्ति इस वर्ष भी कैलेण्डर का मूल्य चार रुपये प्रति तथा 400 रुपए सैकड़ा रखा गया है। इसलिये सभी आर्य समाजें, शिक्षण संस्थाएं व आर्य बन्धु शीघ्र अति शीघ्र कैलेण्डर सभा कार्यालय से मंगवा कर अपने सदस्यों व इष्ट मित्रों में वितरित करें। कार्यालय का समय प्रातः 10.00 बजे से सायं 5.00 बजे तक है। रविवार को अवकाश रहता है इसलिये समय पर अपना व्यक्ति भेज कर कैलेण्डर मंगवाएं। **-प्रेम भारद्वाज सभा महामंत्री**


# गुरुकुल का आयुर्वेद महान
## घर-घर में मिले रोगों से निदान

100 गुरुकुल शताब्दी

**गुरुकुल च्यवनप्राश**
सभी के लिए स्वादिष्ट,
रुचिकर, पौष्टिक रसायन।

**गुरुकुल पायोकिल**
पायोरिया की आयुर्वेदिक औषधि
दांतों में खून रोके, मुंह की दुर्गन्ध दूर करे,
मसूड़ों के रोग, ढीले दांत ठीक करे।

**गुरुकुल शतशिलाजीत सूर्यतापी**
पुष्टीदायक, बलवर्धक
शरीर में नया खून और उत्साह का अनुभव

**गुरुकुल ब्राह्मी रसायन**
बुद्धिवर्धक, स्फूर्तिदायक, दिमागी कमजोरी दूर करे।

**गुरुकुल मधुमेह नाशिनी गुटिका**
मधुमेह एवं प्रत्येक प्रकार के प्रमेह में लाभदायक

**गुरुकुल मधु**
गुणवत्ता एवं ताज़गी के लिए

**गुरुकुल चाय**
खाँसी, जुकाम, इन्फ्लूएंजा व
थकान में अत्यंत उपयोगी।

**अन्य प्रमुख उत्पाद**
गुरुकुल द्राक्षारिष्ठ
गुरुकुल रक्तशोधक
गुरुकुल अश्वगंधारिष्ट

**गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार** डाकघर : गुरुकुल कांगड़ी-249404, ज़िला-हरिद्वार (उत्तरांचल) फोन : 0134-416073

शाखा कार्यालय : 63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-6, फोन : 23261871


श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा आर. के. प्रिंटर्स प्रैस, टाण्डा फाटक जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।